Lecture No (03)

Name of the college - A.P.S.M. College. Barauni, Begusarai
L.N.M.U. Darbhanga.

Name - Dr. Bharti Kumari (GT)
Deptt - A.I.H. Sc

Lesson/ plan. B.A Part II (H) A.I.H.Sc Paper III
Name of Topic - Chola Administration system.
Date - 18-06-21

चोल शासन व्यवस्था :-

वी.ए स्मिथ के मतानुसार, "चोल राज्य का शासन प्रबंध यद्यपि बहुत प्राचीन काल में संगठित हुआ था, परन्तु फिर भी बहुत सुव्यवस्थित था।" अनेक अभिलेखों से चोल साम्राज्य -प्रबंध के विषय में पर्याप्त सामग्री प्राप्त होती है।

(1) केन्द्रीय शासन (Central Administration)
(2) प्रान्तीय प्रबंध -(State Level Management)
(1) लोकप्रिय असेम्बलियाँ -(Popular Assemblies)
(2) स्थानीय स्वशासन -(State Level Mangment) Local Admenistion
(3) न्यायिक प्रशासन -(Local Administration) Judical Administion)
(4) आय एवं व्यय - Income and Expenditure
(5) थल एवं जल सेनाएँ - Army and Navy

(A) केन्द्रीय शासन - देश का सबसे बड़ा अधिकारी राजा ही था। देश के प्रबंधन को राजा, मंत्री और कई अन्य प्रमुख अधिकारी आपसी सहयोग से चलाते थे। "राज्य का सम्पूर्ण ढाँचा सम्राट पर केन्द्रित था।" राजकीय वंश ही अधिकार व्यवस्थाओं को नियत करता था। राजा अपनी प्रजा का सेवक होता था। प्रजा अपने चोल शासकों की प्रतिमाएँ मंदिरों में स्थापित कर उनको देवताओं की भाँति पूजा करते थे।

लोकप्रिय असेम्बलियाँ →

P.T.O.

Scanned with CamScanner

चोल राज्य प्रबंध में प्रजातंत्र का भी एक विशेष रूप था राज्य का सम्पूर्ण महत्वपूर्ण कार्य परिषदों द्वारा ही सम्पन्न किया जाता था। चोल राज्य की अधिक लोकप्रियता इन परिषदों के कारण ही थी। इन परिषदों को निम्नानुसार वर्णित किया गया था।

(A) नाडार → यह परिषद् जिला अथवा नाडुओं की होती थी एवं जिले में उत्पन्न होने वाली सभी समस्याएँ इसी परिषद् में सुलझायी जाती थी।

(B) नगरम → व्यापार और व्यवसाय की उन्नति के लिए नगरों में भिन्न परिषदें होती थी।

(C) ऊर → प्रत्येक गाँव के आपसी झगड़ों को निपटाने के उद्देश्य से 'ऊर' नामक परिषदें हुआ करती थी।

(D) सभा → ग्रामों में सभा के नाम से ब्राह्मणों की अलग परिषदें हुआ करती थी। इन परिषदों में ब्राह्मणों की समस्याओं को सुलझाया जाता था।

प्रांतीय प्रबंध :- (State level Management)

सम्पूर्ण राज्य कई प्रांतों अथवा मण्डलों में विभाजित था। यह गवर्नरों के अधीन थे। गवर्नर प्रायः राजवंश के हुआ करते थे। प्रांतों को जिला या वलनाडुओं में तथा जिलों को तहसीलों या नाडुओं में वितरित किया जाता था। प्रत्येक मंडल अथवा प्रान्त एक वायसराय के अधीन होता था। वह केन्द्रीय सरकार से पत्र - व्यवहार जैसे कार्य करता रहता था। अनेक छोटे-छोटे अधिकारी उसके कार्यों में सहयोग करने के लिए नियुक्त किये जाते थे।

स्थानीय स्वशासन → (Local Administration)

गाँव अपना कार्य करने के लिए पूर्ण रूप से स्वतंत्र हुआ करते थे। हर एक कृषि का कार्य एक पंचायत संभालती थी, जिसे सभा कहा जाता था। इस सभा के सदस्यों को लोगों द्वारा स्वयं ही चुना जाता था तथा ये सदस्य प्रायः एक वर्ष की अवधि तक अपने पद के कार्यभार को संभालते थे। पुलिस पर भी सभा ही नियंत्रण रखती थी। सभा के पास न्यायिक शक्तियाँ भी थी। इन्हीं कारणों से चोल शासन-प्रबंध बहुत

P.T.O.

Scanned with CamScanner

-ही सफल सिद्ध हुआ था।

न्यायिक प्रशासन — (Judical Administration)

न्याय की सभी अवस्थाएँ आधुनिक तरीके की हुआ करती थी। दोनों ही पक्ष अपनी-अपनी बात को कहने के लिए स्वतंत्र होते थे। बाद में गवाह पेश करके सभी बातों को ध्यान में रखते हुए फैसले किये जाते थे।

आय एवं व्यय :— (Income and Expenditure)

आय का बहुत बड़ा स्रोत भूमि हुआ करता था। यह सारी उपज का छठा भाग होता था। अकाल एवं बाढ़ जैसे स्थितियों में भूमि कर को माफ कर दिया जाता था। ग्राम सभाओं द्वारा उपज या धन के रूप में सरकार को कर दिया जाता था। उस समय प्रयोग किये जाने वाले सिक्कों को काशु कहा जाता था। जुर्माना, पशुओं, तालाबों आदि से भी आय होती थी। उपरोक्त प्रकार के सरकार के पास आय के कई स्रोत थे। चोल राजाओं द्वारा कावेरी नदी में से कोई अन्य नहरें निकलवायी गयी। राजेन्द्र प्रथम के समय गंगाकोंड-चोलपुरम के स्थान पर एक झील को 16 मील तक किनारे बनाए गए, जिससे अधिकतर गरीब किसान लाभ ले सके। चोल राजाओं द्वारा मन्दिरों, तालाबों आदि पर भी अत्यधिक ध्यान दिया गया।

थल एवं जल सेनाएँ :— (Army and Navy)

चोल शासकों द्वारा अपनी सामुद्रिक सेना की ओर विशेष ध्यान दिया गया एवं अपने राज्य विस्तार तथा सुरक्षा की दृष्टि से उन्होंने एक शक्तिशाली सेना रखी हुई थी। जिसके अंदर पैदल, घुड़सवार एवं जल सेना भी शामिल थी। इनके द्वारा अरब सागर एवं महासागर के कई द्वीपों पर विजय प्राप्त की गई और निकोबार,

मलाया इत्यादि पर भी इनका ही अधिकार हो गया था। दक्षिण को मंदिरों का प्रवेशद्वार कहे जाने वाले का कारण मुख्य रूप से यह है कि लगभग हर दक्षिण राज्य एवं सभी महत्वपूर्ण प्रमुख राजवंश ने मंदिर वास्तुकला में सर्वाधिक रूचि ली एवं इसमें सर्वाधिक प्रगति की।

(1) <u>चालुक्य और पल्लव एवं मंदिर निर्माण</u> →

यद्यपि चालुक्य एवं पल्लव वंश के राज्यों में होता रहता था, फिर भी दोनों ही वंशों के राज्यों में मंदिर के निर्माण कार्य निरन्तर होते रहे। माना जाता है कि पुलकेशियन द्वितीय ने जब पट्टदकल में मंदिर का निर्माण करवाया, तो उसने काँचीपुरम के मंदिर की शैली का अनुसरण किया था। प्रारंभिक चालुक्य मंदिर ऐहोल में 600 ई० के आसपास बने थे।

(2) <u>पल्लव</u> :— पल्लव राजा भी महान भवन - निर्माता हुआ करते थे। राजा महेन्द्रवर्मन प्रथम द्वारा अधिकतर मंदिरों का निर्माण चट्टानों को काटकर करवाया गया था। त्रिचनापल्ली की चट्टानों को काटकर बनाई गई गुफाएँ इस काल की सबसे उत्कृष्ट कृतियों में सम्मिलित है

(3) <u>राष्ट्रकूटों</u> :— ऐलोरा की चट्टानों को काटकर कैलाश मंदिर का निर्माण कृष्ण प्रथम द्वारा करवाया गया था। राष्ट्रकूट वास्तुकला के सुन्दर उदाहरणों में ऐलीफेंटा एवं मालखेड़ा के मंदिर देखे जा सकते है। माना जाता है कि अमोघवर्ष एक सच्चा जैन था एवं उसने कई मंदिरों का निर्माण भी करवाया था।

(4) <u>चोल</u> :—

इनके शासनकाल में मंदिर निर्माण कला अपने चरमोत्कर्ष तक पहुँच गई थी। राजराजा प्रथम द्वारा तंजौर का वृहदेश्वर मंदिर निर्मित करवाया गया।

भारती कुमारी
A.I.-K-2C
Date - 18-06-21